بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 15 मई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 15 ,1405 हश)

इन्केसारी और फ़रोतनी (विनयशीलता एवं विम्रता) की रौशनी में आँहज़रत ﷺ के अख़लाक़े फ़ाज़िला का दिल को छूने वाला तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 15.05.2026

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب-143516

أَشْهَدُ أنْ لا إلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۔ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: हम इस बात पर यक़ीन और ईमान रखते हैं कि अगर दुनिया में कोई कामिल इंसान पैदा हुआ है तो वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। आप स. से पहले और न बाद में कोई कामिल इंसान पैदा हुआ। हुक़ूक़ुल्लाह की अदायगी हो या हुक़ूक़ुल-इबाद की अदायगी, आप सल्ल. की ज़ात में तमाम आला अख़लाक़ जमा नज़र आते हैं। आप सल्ल. के आला तरीन अख़लाक़ में से एक ख़ुल्क़ इन्केसारी और फ़रोतनी का भी है। आज इसी हवाले से मैं कुछ हदीसों और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ कथन पेश करूँगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी कामिल इंसान का नमूना मौजूद नहीं और न आइंदा क़ियामत तक हो सकता है। फिर देखो कि जिस चमत्कार की ताक़त थी उसके मिलने पर भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शामिल-ए-हाल हमेशा उबूदियत ही थी और बार-बार اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ ही फ़रमाते रहे।

फ़रमाया: ख़ाली शेख़ियों से और बेजा तकब्बुर-बड़ाई से परहेज़ करना चाहिए और इन्केसारी और तवाज़ुअ इख़्तियार करनी चाहिए। देखो! आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो कि हक़ीक़तन सबसे बड़े और मुस्तहिक़-ए-बुज़ुर्गी थे उनके इन्केसार और तवाज़ुअ का एक नमूना क़ुरआन करीम में मौजूद है। लिखा है कि एक अंधा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमकी ख़िदमत में आकर क़ुरआन करीम पढ़ा करता था। एक दिन आप सल्ल. के पास मक्का के लीडर और नगर के अन्य मुख्या जमा थे

और आप सल्ल. उनसे बातों में मसरूफ़ थे। इस अंधे ने थोड़ी देर इंतिज़ार किया और फिर चला गया। फ़रमाया: यह एक मामूली बात है मगर अल्लाह तआला ने इसके बारे में सूरत नाज़िल फ़रमा दी। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके घर पर गए और उसे साथ लाकर अपनी चादर-ए-मुबारक पर बिठाया। असल बात यह है कि जिन लोगों के दिलों में अज़मत-ए-इलाही होती है उन्हें लाज़िमन(अवश्य) ख़ाकसार और मुतवाज़ेअ बनना पड़ता है, क्योंकि वो ख़ुदा की बेनियाज़ी से हमेशा तरसाँ व लर्ज़ाँ रहते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यह महज़ एक वाक़िआ नहीं जो क़ुरआन करीम में बयान हुआ है या हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने बयान फ़रमाया है, बल्कि यह एक सबक़ है जो हमें दिया गया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमतुम्हारे लिए उस्वा-ए-हसना हैं। पस अगर आप सल्ल. की मुहब्बत का दावा है तो तुम भी इन्केसारी और फ़रोतनी के आला मेयार हासिल करने की कोशिश करो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर इंसान के सर के साथ दो ज़ंजीरें बँधी हुई हैं। एक ज़ंजीर आसमान की तरफ़ है और एक ज़ंजीर ज़मीन की तरफ़ है। जब बंदा इन्केसारी और फ़रोतनी इख़्तियार करता है तो वो फ़रिश्ता जिसके हाथ में आसमान वाली ज़ंजीर है, वो उस ज़ंजीर को ऊपर उठा लेता है। और जब वो ग़ुरूर(अहंकार) और तकब्बुर करता है तो ज़मीन वाली ज़ंजीर उसे नीचे खींच लेती है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फ़रमाया: जब बंदा इन्केसारी इख़्तियार करता है तो अल्लाह तआला उसे सातवें आसमान तक बुलंद कर देता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपने लिए इन्केसारी के क्या मेयार थे , इस हवाले से हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक मरतबा एक शख़्स ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुख़ातिब करके कहा: ऐ हमारे सरदार इब्न-ए-सरदार! ऐ ख़ैर इब्न-ए-ख़ैर! उसकी यह बात सुनकर आप सल्ल. ने फ़रमाया: लोगो! तक़्वा को अपने ऊपर लाज़िम कर लो, शैतान तुम्हें बहका न दे। मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ, अल्लाह का बंदा और उसका पैम्बर। अल्लाह की क़सम! मैं यह पसंद नहीं करता कि तुम मुझे उस मर्तबे से जो मुझे अल्लाह ने दिया है, बढ़ा-चढ़ाकर बयान करो।

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फ़रमाया: किसी को उसका अमल जन्नत में दाख़िल नहीं करेगा। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपको भी नहीं? आप सल्ल. ने फ़रमाया: नहीं! मुझे भी नहीं सिवाए इसके कि अल्लाह मुझे अपने फ़ज़्ल में ढाँप ले।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ किया करते: ऐ मेरे अल्लाह! मुझे मिस्कीन के तौर पर ज़िंदा रख, और मिस्कीन के तौर पर मौत देना, और मिस्कीनों के गिरोह में मुझे उठाना।

एक औरत जिसकी अक़्ल में कुछ फ़र्क़ था, उसने आप सल्ल. से कहा: ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! मुझे आप सल्ल. से काम है। आप सल्ल. ने फ़रमाया: ऐ उम्म-ए-फ़ुलाँ! तू जिस गली में भी चाहती है मुझे ले चल, यहाँ तक कि मैं तेरा काम कर दूँ।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अनसार के पास जाते तो उनके बच्चों को सलाम करते, उनके सरों पर हाथ फेरते और उनके लिए दुआ किया करते थे। एक मरतबा

एक आदमी आप सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्ल. से बात की। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमके रोब की वजह से उसके कंधे काँपने लगे तो आप सल्ल. ने फ़रमाया: इत्मिनान रखो! मैं कोई बादशाह नहीं, मैं तो एक ऐसी औरत का बेटा हूँ जो ख़ुश्क गोश्त खाया करती थी।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला ने हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जैसे-जैसे कामयाबियाँ अता कीं, आप सल्ल. वैसे-वैसे इन्केसारी और फ़रोतनी इख़्तियार करते चले गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फ़रमाया: मेरी तारीफ़ बढ़ा चढ़ा कर न किया करो जैसे नसारा ने इब्न-ए-मर्यम की तारीफ़ में मुबालग़ा किया। मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बंदा हूँ। तुम सिर्फ़ यह कहो कि अल्लाह का बंदा और उसका रसूल।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: किसी को न चाहिए कि वो कहे कि मैं यूनुस बिन मत्ता से अफ़ज़ल हूँ। बावजूद अफ़ज़ल होने के, आप सल्ल. ने अफ़ज़लियत के इज़हार से इन्केसारी की वजह से मना फ़रमा दिया। एक शख़्स ने आप सल्ल. को "ख़ैरुल-बरिय्या" कहकर मुख़ातिब किया तो आप सल्ल. ने फ़रमाया: वो इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यक़ीनन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मख़लूक़ में सबसे बेहतरीन थे और हैं और ख़ैरुल-बरिय्या हैं, मगर आप सल्ल. ने इंतिहाई इन्केसारी से इसे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ मंसूब कर दिया।

जब मक्का फ़त्ह हो गया तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने एक लाख सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ हज फ़रमाया और उस वक़्त आप सल्ल. की फ़रोतनी का यह आलम था कि आप सल्ल. ने एक आम कजावे वाली सवारी पर हज किया। आप सल्ल. की चादर चार दिरहम के बराबर, बल्कि उससे भी कम की थी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाम मज़हर-ए-जमाल है और इसके बिलमुक़ाबिल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाम मज़हर-ए-जलाल है। वजह यह है कि मुहम्मद नाम में सिर्र-ए-महबूबियत है, जबकि इस्म-ए-अहमद में सिर्र-ए-आशिक़ियत पोशीदा है। महबूबियत जो इस्म-ए-मुहम्मद में मख़फ़ी थी, सहाबा के ज़रिए से ज़ुहूर में आई और जो लोग हतक करने वाले और गर्दनकश थे, महबूब-ए-इलाही होने के जलाल ने उनकी सरकोबी की।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मरीज़ की इयादत फ़रमाते, जनाज़े पर तशरीफ़ लाते और गधे पर सवार हो जाते। ग़ुलाम की दावत क़बूल फ़रमाते।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमलोगों के जज़्बात का कितना ख़याल रखते थे इसकी मिसाल यूँ मिलती है कि आप सल्ल. ने एक मरतबा एक कोढ़ी का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ प्याले में शामिल किया और फ़रमाया: अल्लाह का नाम लेकर खाओ, उस पर भरोसा करते हुए और तवक्कुल करते हुए खाओ।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने एक सफ़र में बकरी का गोश्त पकाने का इर्शाद फ़रमाया तो लोगों ने बकरी को ज़बह करना, खाल उतारना और खाना पकाना वग़ैरह काम अपने-

अपने ज़िम्मे ले लिए। इस पर आप सल्ल. ने फ़रमाया: ईंधन जमा करना मेरे ज़िम्मे हुआ। सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने अर्ज़ की: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम आप सल्ल. के लिए काफ़ी हैं। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फ़रमाया: मैं जानता हूँ कि तुम काफ़ी हो, मगर मैं नहीं चाहता कि मैं तुममें मुमताज़ होऊँ, क्योंकि अल्लाह तआला पसंद नहीं करता कि उसका बंदा लोगों में मुमताज़ नज़र आए।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर के काम-काज में घर वालों की मदद किया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त होता तो आप सल्ल. नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इसमें उन मर्दों के लिए भी हिदायत है जो घर के काम-काज से बिल्कुल इनकारी हो जाते हैं और फिर बीवियों को शिकायत पैदा होती है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने जूते की ख़ुद मरम्मत कर लेते थे, अपना कपड़ा सी लेते थे और अपने घर में उसी तरह काम किया करते थे जैसे तुममें से कोई अपने घर में काम करता है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इससे यह भी मालूम हुआ कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी अपने घर में बीवियों का हाथ बटाया करते थे मगर यहाँ यह भी वाज़िह हो कि घर के काम-काज की असल ज़िम्मेदारी बीवियों की है। आप सल्ल. ने हमेशा तरजीही सुलूक से इनकार किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने मस्जिद-ए-नबवी की तामीर में ईंटें ढोने के काम में लोगों का साथ दिया। ख़ंदक़ खोदे जाने के वक़्त मिट्टी ढोई और हालत यह थी कि मिट्टी ने आप सल्ल. के सीने के बालों को छुपाया हुआ था।

एक मौक़े पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्ल. के तशरीफ़ लाने पर खड़े हुए तो आप सल्ल. ने फ़रमाया: ऐसा न करो जैसे अहल-ए-फ़ारस अपने बड़ों के लिए करते हैं। हज़रत मुसलह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने आने पर लोगों को खड़े होने से मना फ़रमाया करते थे और फ़रमाते: यह तो ईरानियों का रिवाज है, मैं कोई बादशाह नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: मेरे नज़दीक पाक होने का यह उम्दा तरीक़ है और मुमकिन नहीं कि इससे बेहतर कोई तरीक़ मिल सके कि इंसान किसी क़िस्म का तकब्बुर और फ़ख़्र न करे। न इल्मी, न ख़ानदानी, न माली। इंसान जब तक एक ग़रीब व बेकस बुढ़िया के साथ वो अख़लाक़ न बरते जो एक आला-नसब आलीजाह इंसान के साथ बरतता है या बरतने चाहिए और हर एक तरह के ग़ुरूर और घमंड और बड़ाई से अपने आप न बचाए वो हरगिज़ हरगिज़ ख़ुदा तआला की बादशाहत में दाख़िल नहीं हो सकता।

अल्लाह तआला हमें इन्केसारी की हक़ीक़त को समझने और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमके उस्वे को हमेशा सामने रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَن یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلاَ مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلاَ ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ أَنْ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہ اِنَّ اللّٰہَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131